International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 6, September-October 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

निराला कृत तुलसीदास में लोक चेतना

Devendra Kumar Gupta

Assistant Professor, Hindi, Government College, Dholpur, Rajasthan, India

सार

तुलसीदास में राष्ट्र के प्रति उर्ध्वमुखी चेतना का जो लोकमंगलकारी रूप है, वह निराला के चरित्र को भी उजागर करता है। निराला आसुरी शक्तियों के विरुद्ध निरन्तर जूझते रहने वाले दुर्धर्ष योद्धा थे। वे अपनी अद्वैतवादी दृष्टि से प्रकृति को जड़ता से मुक्त कर निरन्तर चेतना प्रदान करते रहे, तुलसीदास' में गोसाई जी के चरित्र का मौलिक रूप हमारे सामने आता है। मध्यकालीन इतिहास से ज्ञात होता है कि मुसलमानों की शक्ति अटूट और अपार थी, उस महान शक्ति से लोहा लेने के लिए राणा प्रताप जैसे महान त्यागी, देशभक्त और योद्धा भी विफल रहे तब कर्तव्यच्युत, स्पर्धागत उद्धत क्षत्रिय और चाटुकार ब्राह्मण उनके खिलाफ क्या कर सकते थे। ऐसे संकट के समय बल से नहीं बुद्धि से लोहा लिया जा सकता था। बिखरे हुए चेतनकणों को 'ज्योतिपिंड' के रूप में संगठित करने का विलक्षण कार्य बुद्धिजीवियों का ही है। संस्कृति के ऐसे महान संकट के समय तुलसीदास का अवतरण होता है । तुलसी भारतीय संस्कृति के दैन्य पराजय का मूल कारण यहाँ भारतीय जनों के ऐहिक सुखों की साधना को मानते हैं। इसलिए वे भौतिक सुखों की आसक्ति से मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं किन्तु इस प्रयास में रत्नावली का सौंदर्य बाधक है । प्रथम प्रयास में वे संस्कारों के जाग उठने पर भी मोहासक्ति से ऊपर नहीं उठ पाते, इसलिए प्रकृति रूपी अहिल्या का उद्धार नहीं कर पाते और प्रिया ही उन्हें काम्य हो जाती हैं।

निराला स्त्रियों के प्रति उच्च विचार रखते थे, यहाँ भी वे उसी पवित्रता को मूल रूप में प्रस्तुत करते हैं । रत्ला द्वारा भर्त्सना यहाँ अत्यन्त संयत भाषा में है, यहाँ इससे उनकी काम वासना ही नष्ट नहीं होती बल्कि संस्कार भी पूर्णतया जाग जाते हैं । शारदा रूपी प्रिया की दृष्टि से बंधते ही भारतीय संस्कृति के सत्य स्वरूप का दर्शन होते ही तुलसी निर्द्वन्द्व हो उठते हैं । आनंद से भरकर उनकी वाणी धनीज्योति के रूप में फूट पड़ती है।

How to cite this paper: Devendra Kumar Gupta "Public Consciousness in the Unique Work Tulsidas" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-6, October 2022, pp.1155-1161, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52030.pdf

IJTSRD52030

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

स्पष्ट है तुलसी के चरित्र में ' जीव ' का भी एक इतिहास है, जो सुख में फंसता है और फिर मुक्त होता है । परन्तु इस मुक्ति में स्वयं के कल्याण की भावना नहीं है बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के उद्धार की कामना है । यहाँ तुलसी भौतिक सुखों का परित्याग करते हैं, देश – समाज और सारे मानव जाति के लिए । यही उनके चरित्र की विशेषता है । एक और बात दृष्टव्य है, वह यह कि यहाँ तुलसी भौतिक सुखों का ही परित्याग करते हैं, रत्नावली का नहीं, वे तो बहिर्गमन करते हैं, रत्ना की उसी दिव्य मूर्ति को हृदय में धारण कर।[1]

अस्तु रत्ना के प्रति उनका प्रेम आयंत हैं, किन्तु इससे भी आगे बढ़कर, वैयक्तिक सीमा लांघकर वे जाति, राष्ट्र और विश्व कल्याण की चेतना से सम्पन्न होकर कर्तव्य के प्रति कृत संकल्प है । स्पष्ट है कि उनका वैराग्य आसक्ति से है । निष्काम कर्म से नहीं । इस आख्यानक प्रगीत में जितना भव्य चित्रण तुलसीदास का है उससे भी अधिक आकर्षक चरित्र है रत्नावली का । रत्नावली, प्रेम, शक्ति और ज्ञान की त्रिवेणी है।

उसका चरित्र भारतीय नारीत्व की गरिमा से ओप्रप्रोत निराला की लेखनी में ढला एक अविस्मणीय चरित्र है । १० वह प्रेरणा की अजस्र स्त्रोतस्विनी है । रत्नावली यदि रास्ते में नदी की भांति बाधक हो सकती है । यदि वह अपने कमल दलों में क्षण भर सुख से बैठे हुए भ्रमण को बंद कर सकती है तो अपनी सुगंधि से भ्रमर की हृदय कलिका को खोलकर प्रकाश से भी भर सकती है।

वह पुरुष के मोह जनित दुर्बलता को ज्ञान में परिणत कर देशकाल को संकट से बचा भी सकती है । इस रचना में रत्नावली का दर्शन नभ तल में चमकने वाली तारिका के रूप में होता है। फिर प्रकृति के रूप में होता है। पश्चात् प्रकृति के अनुरूप सौंदर्य के रूप में वह विस्तरित होकर वन पर्वत नदी नाले, लता – सुमन आदि में प्रतिबिम्बित हो उठती है।

उसकी उच्छ्वासों से दिशाएँ सुगंध से भर उठती हैं । उसकी आंखों के ' कोए ' इंदीवर के समान विमल होते हुए भी मुख मंजू सोम में कलंक के समान है । उसकी नीली अलकें मारुत – प्रेरित गिरिशृंगों में ठहरे हुए घने नीले बादलों के समान क्रांतिमान हैं । उसकी धनी ज्योति विद्युत से भी अधिक चंचल व सुन्दर है । वह मनमोहिनी है। उसकी शोभा अक्षय पुष्प के समान है।[2,3]

शारीरिक सौंदर्य से ही नहीं, मानसिक सौंदर्य से भी रत्नावली सम्पन्न है । वह सत्य यष्टि है । उसका अनुराग उषारूपी फाग में आग के समान है । इतना होते हुए भी यह त्याग और करुणा की मूर्ति है । कुंकुम – शोभा रत्नावली पति की अत्यंत प्रिया होती हुई भी भाई, भाभी, मां – बाप के स्नेह की सरिता है । यह मर्यादा में सीता के समान और ज्ञान में गीता के समान पवित्र है । कामवासना के लिए अग्नि शिखा के समान है। लोक व्यवहार से च्युत तुलसी के ससुराल आगमन पर वह चंचल हो उठती है।–

धिक, आए तुम यों अनाहून
धो दिया श्रेष्ठ कुल धर्म धूत
राम के नहीं काम के सूत कहलाए
हो विके जहाँ तुम बिना दाम
वह नहीं और कुछ हाड़ चाम
कैसी शिक्षा, कैसे विराम पर आए

इस गंभीर घोष से वह पति को सन्मार्ग में लाती है । अपनी दिव्य दृष्टि से पति के पूर्व संस्कारों को जगाती है, पति को ज्ञान और कर्म क्षेत्र की ओर उन्मुख करती है । पति के वैराग्य के संकल्प से रत्ला जड़ीभूत हो जाती है। उसकी आंखें छलछला उठती है, मौन रागिनी फूट पड़ती है। वैराग्य धारण के बाद भी रत्ना तुलसी के हृदय में ज्योति – सी छिपी रहती है।

प्रेम, त्याग, ज्ञान, भक्ति और सौंदर्य की इस मूर्ति को विधाता ने जैसे भारत के उद्धार के लिए ही गढ़ा था । वास्तव में रत्ना यहाँ महान है । महाकवि निराला ने उसके जीवन के अछूते प्रसंगों का चित्रण कर साहित्य का बहुत कल्याण किया है । रत्ना, सूर्य की ज्ञानदात्री किरण है जिसकी दीप्ति से सरस्वती और स्वयं लक्ष्मी आलोकिक होती है, वास्तव में वह प्रकृति स्वरूपा है ।

यह श्रीपावन, गृहिणी उदार
गिरिवर सरोज, सरि पयोधार
कर वन तरु, फैला पल निहारती देती
सब जीवों पर है एक दृष्टि
तृण – तृण पर उसकी सुधा वृष्टि
प्रेयसी, बदलती वसन सृष्टि नव लेती

यह पावन गृहिणी का एक उदात्त चित्र है रत्नावली का या मनोहरा का, दोनों महाकवियों में कहां कितना अन्तर है ? दोनों की प्रेरणासोत तो नारी ही है ।११ और प्रेरणा स्थल भी ससुराल। ‘ तुलसीदास ’ देशकाल के शर से बिंधे हुए महाकवि निराला की आत्माभिव्यक्ति हैं । जिस प्रकार पत्नी के माध्यम से तुलसीदास को अनुपम ज्ञान मिला था उसी प्रकार निराला भी अपने लिए मानते हैं। तुलसीदास के पूर्व भी अपनी सांस्कृतिक चेतना को निराला ने अनेकों बार बदला राग, यमुना के प्रति शिवाजी का पत्र आदि लम्बी कविताओं में अभिव्यक्त किया था। यहाँ उन्हीं विखरे हुए रत्नकणों को संगठित रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विवेकानन्द राष्ट्र की मुक्ति के लिए राष्ट्रीय एकता निम्न वर्ग और नारियों का उद्घार चाहते थे। राष्ट्र के उत्थान के लिए वे ज्ञान को आवश्यक मानते थे । निराला विवेकानन्द के जीवन दर्शन से अत्यधिक प्रभावित थे और इसी दर्शन के अनुरूप उन्होंने इस आख्यानक प्रगीत में दलित वर्ग के उत्थान की कामना और नारी की प्रेरणाशक्ति को प्रकट किया है। उनकी सम्पूर्ण चेतना राष्ट्र को अर्पित थी । निराला और गोस्वामी जी की प्रकृति में अद्भुत समानता है, दोनों प्रकृति प्रेमी और दर्शन के क्षेत्र में अद्वैतवादी हैं।[4,5]

निराला और तुलसीदास के शारीरिक सौष्ठव में भी विद्वानों के चित्रणों के अनुसार पर्याप्त समता दिखाई देती है। डॉ . बच्चनसिंह के शब्दों में निराला जी का शारीरिक सौष्ठव इस प्रकार था ’ पुष्ठ लम्बा शरीर, गठी हुई मांस पेशियाँ, उन्नत ललाट विस्तृत वक्ष, गौरवर्ण, सिन्धुतट वाले आर्यों के जीवन प्रतीक आज के ठिगने कद, दुबले पतले विकृत मानव शरीर यष्टि धारण करने वाले व्यक्तियों के मध्य में आर्यों की दैहिक परम्परा के प्रतिनिधि प्रतीत होते हैं। १२ कुछ इसी तरह का व्यक्तित्व मानस के हंस में नागर जी ने ‘ तुलसी ’ का चित्रित किया है।

आजानुबाहु, चमकते सीने, पीन सी देह, लम्बी सुतवा नाक, उठी दाढ़ी, पतले होंठ, सिर और चेहरे के बाल घुटे हुए । लगता था मनुष्यों के समाज में कोई देव जाति का पुरुष आ गया है । यह तुलसी के वृद्ध शरीर का वर्णन है, लगता है । नागर जी ने यहाँ निराला जी का ही व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है। डॉ . रामविलास शर्मा के शब्दों में कैसे थे तुलसीदास ?

रामायण, विनय पत्रिका में अपने बारे में कहीं कुछ विशेष नहीं लिया, पर आदर्श कवि की मूर्ति वैसी ही रही होगी, जैसे युवक निराला की थी ... वास्तव में ‘ तुलसीदास ’ महाकवि गोस्वामी जी के माध्यम से कवि निराला के स्वयं की चिन्ता है इसलिए यह कविता के रूप में लिखा गया आत्मचरित ही है। वर्ना निराला ढोल गंवार क्षुद्र पशुनारी के लिए ताड़न के अधिकारी, लिखने वाले तुलसी के हृदय में चलते फिरते पर निःसहाय शुद्रगण शुद्र जीवन संबल पुर – पुर में, की भावना व्यंजित नहीं करते । यहाँ निराला ने तुलसीदास को अपनी काव्यात्मक भूमि पर उतारा है जो श्लाध्य है। ‘ कविः प्रजापतिः ’ को पूर्णतया यहाँ चरितार्थ किया गया है। [6,7]

विचार-विमर्श

हिंदी संसार को मनोहरा देवी का भी कृतज्ञ होना चाहिए कि भले ही वे निराला के जीवन में अल्प समय ही रहीं, लेकिन निराला की काव्य संभावनाओं के स्फुरण में उनका भी योगदान है| निराला का ध्यान तुलसीदास के काव्य पर क्षणिक रूप से ही नहीं गया, बल्कि वे तुलसी काव्य पर ऐसे मोहित हुए कि तुलसीदास का गहन अध्ययन किया और रामकृष्ण मिशन के पत्र ‘समन्वय’ में ‘तुलसीकृत रामायण में अद्वैततत्त्व’ लेख लिखते हुए लिखा – “हिंदी का सौभाग्य है कि उसके काव्यकुंज की तुलसी मंजरी की जैसी सुगंध सहित्यवाटिका में शायद कहीं नहीं।” तुलसी के इष्ट ‘राम’ निराला के भी काव्य-नायक बने। निराला ने तुलसी की तरह राम पर महाकाव्य न लिखा, बल्कि ‘राम की शक्तिपूजा’ जैसी महाकाव्यात्मक कविता लिखी। भले ही ‘राम की शक्तिपूजा’ की कथा निराला ने कृत्तिवासी रामायण से ली, लेकिन निराला के मन को राम का संस्कार देने वाले तुलसी ही हैं। ‘राम की शक्तिपूजा’ के राम का चरित्र वैसे तो निराला द्वारा आधुनिक मनोदशा के अनुकूल रचा गया मौलिक चरित्र है लेकिन फिर भी यदि हम तय करना ही चाहें कि निराला के ‘राम’ अधिक निकट किसके हैं, ‘कृत्तिवास के राम’ के अथवा ‘तुलसी के राम’ के; तो निःसन्देह कहा जा सकता है कि निराला के ‘राम’ ‘तुलसी के राम’ के ही अधिक निकट दिखाई देते हैं|

निराला 'भगवान' को अपना नायक बनाने से पहले 'भक्त' को नायक बना चुके थे। अर्थात 'राम की शक्ति पूजा' लिखने से पहले ही वे तुलसीदास पर सौ पदों की लंबी कविता 'तुलसीदास' लिख चुके थे। 'तुलसीदास' की रचना प्रक्रिया के साक्षी रहे डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं –

"सौ बंदों में कविता समाप्त हुई। छन्दों का यह शतदल निराला ने अपने आराध्य कवि तुलसी के चरणों में अर्पित किया। कई महीने का परिश्रम; निराला ने इतना श्रम अब तक किसी कविता पर न किया था। उपन्यास लिखने में समय लगता था, पर इतनी मेहनत न पड़ती थी। स्थापत्य की ऐसी पूर्णता, इतने बड़े पैमाने पर ऐसा सुगठित काव्य-शिल्प उनकी किसी रचना में न आया था। वह थक गये थे, पर प्रसन्न थे।"[8,9]

'तुलसीदास' में निराला ने अपने काव्य के नए उत्कर्ष को छुआ था, लेकिन 'राम की शक्तिपूजा' में निराला ने जो कुछ रचा वह निराला के काव्य का ही सर्वोच्च बिंदु नहीं बल्कि हिंदी काव्य का भी चरम उत्कर्ष है। लेकिन एक व्यक्ति ऐसा भी था जो 'राम की शक्तिपूजा' पढ़कर नहीं बल्कि 'तुलसीदास' पढ़कर निराला के काव्य से प्रभावित हुआ| यह थे- हिन्दी के अप्रतिम साहित्यकार श्री सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'| खेदपूर्ण किन्तु रोचक भी यह है कि एक समय अज्ञेय ने निराला जी की कलात्मक क्षमता को पथभ्रष्ट और निराला को साहित्यिक रूप से चुका हुआ मान लिया था| वर्ष 1937 में 'विश्वभारती क्वार्टरली' में 'मॉडर्न (पोस्टवार) हिन्दी पोएट्री' लेख में लिख चुके थे – "निल निसी बोनम – ऐंड ऐज़ ए लिटररी फोर्स, ऐट ऐनी रेट, निराला इज़ आलरेडी डेड।"[1] लेकिन 'तुलसीदास' पढ़ने के बाद अज्ञेय का निराला के काव्य के बारे में विचार बदला| निराला जी के बारे में लिखे गये संस्मरण 'वसंत का अग्रदूत' में अज्ञेय स्वीकारते हैं – " 'विश्वभारती' पत्रिका में एक लंबा लेख छपा था| आज यह मानने में भी मुझे कोई संकोच नहीं है कि उसमें निराला के साथ घोर अन्याय किया गया था|" इसी संस्मरण में आगे चलकर अज्ञेय जी लिखते हैं-

"..........निरालाजी के काव्य के विषय में मेरा मन पूरी तरह बदल चुका था| वह परिवर्तन कुछ नाटकीय ढंग से ही हुआ| शायद कुछ पाठकों के लिए यह भी आश्चर्य की बात होगी कि वह उनकी 'जुही की कली' अथवा 'राम की शक्तिपूजा' पढ़कर नहीं हुआ, उनका 'तुलसीदास' पढ़कर हुआ| अब भी उस अनुभव को याद करता हूँ तो मानो एक गहराई में खो जाता हूँ| अब भी 'राम की शक्तिपूजा' या निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन 'तुलसीदास' जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उससे भी विलक्षण बात यह है कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दीखता है| मैं मानों संसार का एक स्थिर चित्र नहीं बल्कि एक जीवंत चलचित्र देख रहा हूँ| ऐसी रचनाएँ तो कई होती हैं जिनमें एक रसिक हृदय बोलता है| विरली ही रचना ऐसी होती है जिसमें एक सांस्कृतिक चेतना सर्जनात्मक रूप से अवतरित हुई हो| 'तुलसीदास' मेरी समझ में ऐसी ही एक रचना है| .... 'तुलसीदास' के इस आविष्कार के बाद संभव नहीं था कि मैं निराला की अन्य सभी रचनाएँ फिर से न पढ़ूँ,..........."

'तुलसीदास' की कथा वस्तु ऐतिहासिक प्रसंग है, तो 'राम की शक्तिपूजा' की कथा कृत्तिवासी रामायण से ली गयी है; आशय यह कि ऐसे विषयों पर रचना करते हुए कवि के पास कल्पना करने को सीमित स्थान होता है| लेकिन निराला की सर्जक प्रतिभा ने कुछ इस तरह विषय का निर्वाह किया है कि वे सीमित स्थान के बजाय मुक्ताकाश में रचना करते हुए दिखाई देते हैं| दोनों ही कविताओं को निराला ने अपनी विचारशीलता से वह रूप दिया है कि दोनों ही सर्वथा मौलिक भाव की निष्पत्ति करती हैं; क्योंकि इन कविताओं में कथा मात्र एक माध्यम है, यहाँ निराला कथाकार की भूमिका में नहीं हैं, बल्कि वे एक विचारशील सर्जक की भांति अपने विचार को अभिव्यक्त करने के लिए जनमानस में बसे हुए चरित्रों और कथाओं का सर्जनापूर्ण उपयोग कर रहे हैं| निराला जिस सूक्ष्म विचार को अभिव्यक्त करना चाहते हैं वह स्थूल कथा के स्तर से ऊपर उठकर पाठक/श्रोता के मन को आविष्ट कर लेता है| 'तुलसीदास' के परिचय में डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं – "कथा को प्राधान्य देने वाली कविताएँ हिंदी में शतश: हैं; मनोविज्ञान को आधार मान पद्य में लिखी जानेवाली कविताओं में यह एक ही है।" [10,11]

निराला जी का प्रबल आग्रह था कि कविता में विचार यानी 'आइडिया' मजबूत और तर्कपूर्ण होना चाहिए| वे सुमित्रानंदन पन्त की इसलिए आलोचना भी किया करते थे कि उनकी कविताओं में आइडिया दमदार नहीं है निराला की कविताओं में इसलिए यह लक्ष्य किया जा सकता है कि कवि का विचार विशेष पुष्ट है| 'निराला की साहित्य साधना' में डॉ. रामविलास शर्मा लिखते हैं-

"उनके लिए 'रँगामेज़ी' मन को प्रसन्न करनेवाली क्रिया थी पर रचना में मुख्य वस्तु थी 'आइडिया'। इसमें भाव, विचार, मूर्ति-विधान — सब-कुछ शामिल था। उनके लिए आइडिया कोई अमूर्त कल्पना न थी; वह रचना का अन्तस थी जिसे मानो वह बहुत स्पष्ट देखते थे। पंत में आइडिया की कमजोरी उन्हें खलती थी। मूर्तिकार की तरह इस 'आइडिया' को वह गढ़ते, काटते, छाँटते, सँवारते थे।"

विशेषकर 'राम की शक्तिपूजा' और 'तुलसीदास' इसीलिए निराला जी की और हिंदी साहित्य की महानतम कवितायेँ हैं क्योंकि इनमें कवि के पास एक उच्च विचार है और कवि अपनी मेधा एवं कौशल से उस विचार को पूरी प्रखरता के साथ प्रस्तुत करने में सफल रहा है| इसके लिए निराला ने नया छंद और नयी भाषा गढ़ी लेकिन विचार के साथ समझौता नहीं किया, बल्कि विचार को उसी ऊंचाई पर बनाये रखा है जिस स्तर पर वह उनके मन में था, भले ही तथाकथित साहित्य मर्मज्ञों ने उनपर अस्पष्ट भाषा, व्याकरण के साथ तोड़-मरोड़ और गलत समास-रचना के आरोप लगाये| लेकिन निराला का निरालापन ही यही था कि कुछ भी आरोप लगाये जायें, उन्होंने वही लिखा जो उनके सर्जक मन के भीतर से उमड़ चला|

निराला और उनकी कविताओं के सम्बन्ध में कितना ही कुछ कहा जा सकता है| लेकिन सबसे बेहतर है निराला की कविताओं को पढना| इसलिए अभी यहीं विराम और आइये अंत में 'राम की शक्तिपूजा' की कुछ अंतिम पंक्तियों का आस्वाद लेते हैं –

"साधु, साधु, साधक धीर, धर्म-धन धन्य राम!"
कह, लिया भगवती ने राघव का हस्त थाम।
देखा राम ने, सामने श्री दुर्गा, भास्वर
वामपद असुर स्कन्ध पर, रहा दक्षिण हरि पर।

ज्योतिर्मय रूप, हस्त दश विविध अस्त्र सज्जित,
मन्द स्मित मुख, लख हुई विश्व की श्री लज्जित।
हैं दक्षिण में लक्ष्मी, सरस्वती वाम भाग,
दक्षिण गणेश, कार्तिक बायें रणरंग राग,
मस्तक पर शंकर! पदपद्मों पर श्रद्धाभर
श्री राघव हुए प्रणत मन्द स्वरवन्दन कर।

"होगी जय, होगी जय, हे पुरूषोत्तम नवीन।"
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।

परिणाम

'राम की शक्तिपूजा' उनकी सबसे ओजपूर्ण रचना है और इसमें अंधकार भी अन्य कविताओं की अपेक्षा अधिक है। निराला ने कथानक की प्रकृति को आधुनिक परिवेश और अपने नवीन दृष्टिकोण के अनुसार इस रामकथा के अंश में कई मौलिक प्रयोग किये जिससे यह रचना कालजयी सिद्ध हुई। एक ऐसी लम्बी कविता है जिसमे शक्ति पूजा नामक छंद का प्रयोग है यह छंद निराला जी का अपना मौलिक छंद है। निराला के राम तुलसीदास के राम से भिन्न और भवभूति के राम के निकट हैं। किन्तु कृतिवास और राम की शक्ति पूजा में पर्याप्त भेद है पहला तो यह की एक ओर जहां *कृतिवास* में कथा पौराणिकता से युक्त होकर अर्थ की भूमि पर सपाटता रखती है तो वही दूसरी ओर राम की शक्ति पूजा नामक कविता मे कथा आधुनिकता से युक्त होकर अर्थ की कई भूमियों को स्पर्श करती है। इसके साथ साथ कवि निराला ने इसमें युगीन - चेतना व आत्मसंघर्ष का मनोवैज्ञानिक धरातल पर बड़ा ही प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया है।

कविता का कथानक प्रकटत: राम-रावण के युद्ध और सीता के परित्राण पर आधारित था। निराला से पहले भी संस्कृत और बंगला भाषा के कई कवियों ने इस प्रसंग पर काव्यों की रचना की है परन्तु जो प्रासंगिकता और प्रतीकात्मकता निरालारचित 'राम की शक्ति पूजा' में पाई जाती है अन्यत्र अप्राप्य है। वास्तविकता में निराला के राम भगवान राम नहीं हैं बल्कि मानव राम हैं,पुरूषोत्तम राम हैं। वास्तव में निराला के राम राम हैं ही नहीं बल्कि स्वयं निराला हैं,अपने समय में गरीब,दानी,प्रताड़ित,पराजित और इन सबके परिणामस्वरूप विक्षिप्त सत्य के प्रतीक रहे निराला।[12,13]

'राम की शक्तिपूजा' में निराला जो स्वर सुनते हैं, वे ज्योति के पत्र पर लिखे हुए चित्र हैं: राम, रावण, अंगद, विभीषण आदि के चित्र। राम रावण का यह अपराजेय समर लिखा तो गया है ज्योति के पत्र पर किंतु अक्षर सब अमावस के अंधेरे के हैं। इन चित्रों की पृष्ठभूमि में इतना गहन अंधकार है कि फलक की ज्योति सब ढंक गयी है। अंधकार उगलता हुआ आकाश, सिंह के समान गरजता सागर, रावण का अदृश्य खलखल अट्टहास - ये बिंब हैं जिनसे वेदना और भी घनीभूत हो गयी है।

'राम की शक्तिपूजा' में दो कविताओं का सारतत्व है: 'तुलसीदास' और 'सरोज- स्मृति' और इनके अलावा उसमें नयी सामग्री है: एक पराजित मन और दूसरी, अपराजित मन के अस्तित्व की सघन अनुभूति।

राम की शक्ति पूजा' में वर्तमान को धारण करने की अद्भुत क्षमता है। ज्यों-ज्यों समय बीत रहा है इसकी प्रासंगिकता घटने के बदले बढ़ती ही जा रही है। कविता के आरंभ में अपने ही रक्त से सने श्रीराम की पराजित सेना के चुपचाप,सिर झुकाए शिविरों में लौटने का वर्णन है। चारों तरफ अमावस्या का अंधेरा,पराजय का सन्नाटा है। आकाश अंधकार उगल रहा है,हवा का चलना रूका हुआ है,पृष्ठभूमि में स्थित समुद्र गर्जन कर रहा है,पहाड़ ध्यानस्थ है और मशाल जल रही है। यह परिवेश किसी हद तक राम की मनोदशा को प्रतिबिंबित करता है,जो संशय और निराशा से ग्रस्त है। सारी परिस्थितियाँ उनके प्रतिकूल हैं,बस उनकी बुद्धि (मशाल) ने अभी तक उनका साथ नहीं छोड़ा है और वह प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष करती हुई अभी भी जागृत है।

'राम की शक्तिपूजा' से पहले निराला ने अपने इस दूसरे मन को न पहचाना था। 'तुलसीदास' का एक ही मन है, जो पुराने संस्कारों पर मुग्ध होता है, उनसे लड़ता है। किंतु 'राम की शक्ति पूजा' में राम के दो मन हैं। वेदना की किरणों ने वज्रकठोर अन्तर को बीच से तोड़कर उस के दो हिस्से कर दिये हैं। – "वह रहा एक मन और राम का जो न थका" - वह अथक, अपराजेय, अविचलित मन इस ग्लानि, पराजय और विक्षेप के सम्मुख सदा उठा रहेगा - साक्षीरूप दृष्टा के समान।

राम के मन में जो संशय है – "स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर फिर संशय" -स्थितप्रज्ञ राम को भी उनके मन में उत्पन्न संशय बार-बार हिला दे रहा है। रह-रहकर उनके प्राणों में बुराई और अधर्म की साक्षात मूर्ति रावण की जीत का भय जाग उठता है। इन क्षणों में राम को शक्ति की वह भयानक मूर्ति याद आती है जो उन्होंने आज के युद्ध में देखी थी। राम ने रावण को मारने के लिए असंख्य दिव्यास्त्रों का प्रयोग किया,लेकिन वे सारे-के-सारे बुझते और क्षणभर में शक्ति के शरीर में समाते चले गए जैसे उन्हें परमधाम मिल गया हो। राम ने अपनी स्मृति में यह जो दृश्य देखा तो अतुल बलशाली होते हुए भी वे अपनी जीत के प्रति शंकालु हो उठे और उन्हें लगा कि शायद वे अब अपनी प्रिया सीता को छुड़ा ही नहीं पाएंगे-

"धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध,
जानकी! हाय उद्धार प्रिया का हो न सका।"

राम परेशान हैं यह सोंचकर कि '**अन्याय जिधर है उधर शक्ति है**'। ऐसे में अन्याय और अधर्म के साक्षात प्रतीक रावण को कैसे पराजित किया जाए-

"लांछन को ले जैसे शशांक नभ में अशंक,
रावण अधर्मरत भी अपना,मैं हुआ अपर
यह रहा शक्ति का खेल समर,शंकर,शंकर!"

राम के नेत्रों से इस समय चुपचाप अश्रुधारा बह रही थी। वे उदास थे परन्तु पराजित नहीं थे और बार-बार उनकी भुजाएँ फड़क उठती थीं-"**हर धनुर्भंग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त**"। राम का एक मन और था जो अभी तक भी चैतन्य था-

"वह एक और मन रहा,राम का जो न थका
जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय।"

निराला के राम तुलसी के राम से भिन्न और भवभूति के राम के निकट हैं – " राम पराजित हैं। राम के मन में ग्लानि है किंतु राम के एक मन और है जो पराजित होना नहीं जानता -"वह रहा एक मन और राम का जो न थका..." आत्मग्लानि का स्वर तो है लेकिन संघर्ष मानो और भी तीव्र हो उठा है।

निराला के इस महाकाव्यात्मक खंड में जो गरिमा राम की ग्लानि, उनकी पराजय, वह पूजा के चित्रण में नहीं। निराला साधक हैं, पूजक नहीं। रणभूमि में शत्रु से जूझते हुए ही साधना संभव है

निराला के राम अपने धीरोदात्त स्वरूप को नहीं त्यागते।केवल 'सजल' होकर उनके 'भावित नयनों' से दो आँसू टपक जाते हैं।रावण के अट्टहास की पृष्ठभूमि में निराला के मानवीकृत राम की यह दैन्यता एक ऐसी ट्रैजडी का भाव बुनती है जिससे वह राम की ट्रैजडी न रहकर सभी की ट्रैजडी बन जाती है।[12]

'फिर सुना-हँस रहा अट्टहास रावण खल-खल
भावित नयनों से सजल गिरे दो मुक्तादल '

राम के नयन स्तमित (भींगे हुए) हैं।आज रणभूमि से लौटे तो 'वातावरण प्रशमित' था।राम का धनुष श्लथ था।दृढ़ जटाएँ खुल कर मुख पर प्रतिलट के रूप में फैल गयीं थीं।सर पर मुकुट आढ़ा-तिरक्षा अर्थात विपर्यस्त पड़ा था।सुदूर दुर्गम पर्वत पर 'नैशान्धकार' उतर आया था।अमावस्या थी।आकाश अंधकार उँडेल रहा था।पवन स्तब्ध थी।दिशा का सहज अनुमान लगाना भी मुश्किल था। स्थिर राम संशयग्रस्त थे।रावण जीत गया तब क्या होगा?

'स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर फिर संशय'
रह रह उठता जग जीवन में रावण-जय-भय '

निराला के राम का संशय युद्ध की रणनीति का प्रश्न जितना दार्शनिक है जीवन -क्षेत्र में व्यवहार शास्त्र की एक पहेली के रूप में उतना ही व्यावहारिक-कि यह कैसे हो सकता है? राम भी यह सोचकर निस्तब्ध हैं-

'अन्याय जिधर, हैं उधर शक्ति !' कहते छल छल
हो गए नयन, कुछ बूँद पुनः ढलके द्रगजल '

राम की शक्ति पूजा वस्तुतः इसी बिंदु पर एक गहरी नैतिक दुविधा को प्रस्तावित करके उसके समाधान खोजती है। राम की शक्ति पूजा सत्ता के नैतिक होने के स्वप्न को बुनती है।

शक्ति और मूल्यों की दुविधा की इस परम्परा में निराला के राम की स्थिति थोड़ी सी भिन्न है।निराला आधुनिक संवेदना का प्रतिनिधित्व करते हैं।वह शक्ति के तटस्थ और मूल्यविहीन स्वरूप से हैरान हैं ।वह इस दैवी विधान को समझ नहीं पाते कि शक्ति का यह कैसा खेल है जिसमें नियति न्याय के पक्ष को ही कमज़ोर बना रही है।

'बोले -आया न समझ में यह दैवी विधान
रावण,अधर्मरत भी अपना मैं हुआ अपर
यह रहा शक्ति का खेल समर,शंकर शंकर !
स्वयं महाशक्ति रावण को अपनी गोद में लिए हुए हैं!
'देखा-हैं महाशक्ति रावण को लिए अंक
लांक्षन को ले जैसे शशांक नभ में अशंक

निराला के राम इसका समाधान आधुनिक मनुष्य के आत्मबल को पुनर्प्राप्त करने के यत्न के रूप में सुझाते हैं।उनके राम की दुविधाएँ आधुनिक मनुष्य के जीवन की दुविधाएँ हैं।राम के जीवन में ये दुविधाएँ शक्ति के अन्यायपूर्ण प्रतिनिधीकरण और परिस्थितियों के विकट संयोजन से पैदा हुई हैं। (2)

तभी जांबवान राम को शक्ति पूजा के लिए प्रेरित करते हैं। राम सिंहभाव से शक्ति की आराधना करते हैं और शक्ति अर्थात् भगवती दुर्गा से विजय होने का वरदान प्राप्त करते हैं। यहाँ निराला ने राम की मौलिक कल्पना में सिंह अर्थात् शक्तिवान को देवी के जनरंजन-चरण-कमल-तल दिखाया है अर्थात् उनके मतानुसार शक्ति का प्रयोग हमेशा जनहित में ही होना चाहिए।

कहा गया है कि सूर्य अस्त हो गया लेकिन इतिहास के ज्योतिमर्य पृष्ठों पर अंकित राम रावण का युद्ध आज समाप्त न हुआ और न ही उसे कोई पक्ष जीत सका। "ज्योति के पत्र पर लिखा " का प्रयोग कवि निराला ने इसलिए किया है कि वह युद्ध मानव इतिहास का एक आलोकपूर्ण अध्याय है क्योकि वह सत और असत के बीच था और उसमें अंततः असत पर सत कि विजय हुई थी। निराला ने इस युद्ध को 'अमर ' भी कहा है क्योकि मानव स्मृति से इस युद्ध को मिटाना असंभव है।[13]

इस कविता का मुख्य विषय सीता की मुक्ति है राम - रावण का युद्ध नहीं, इसलिए निराला युद्ध का वर्णन समाप्त कर यथाशीघ्र सीता की मुक्ति की समस्या पर आ जाते हैं। यह समस्या चूँकि युद्ध से उत्पन हुई थी और उसमें भी आज मिली निराशा से ,इसलिए इसका वर्णन करना जरूरी था। कहा जा सकता है कि सीता की मुक्ति की पृष्ठभूमि है युद्ध, इसलिए कवि उसे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता था। यहां मुक्ति की समस्या विकटता युद्ध की विकटता की ही देन थी इस कारण युद्ध की विकटता को कवि निराला ने अधिक से अधिक मूर्त बनाने की कोशिश की है।

इसकी अंतिम पंक्ति - " जानकी भीरू - उर - आशाभर - रावण - संवर। " में जानकी का उल्लेख इस बात का पक्का प्रमाण है कि इस कविता के केंद्र में वही हैं और कुछ नहीं। युद्ध उन्हीं के लिए हो रहा है, राम की निराशा भी उन्हीं की मुक्ति को लेकर है और शक्ति -पूजा भी वे उन्हीं के लिए करते हैं इसलिए इस कविता में लक्ष्य सीता ही हैं राम तो केवल उपलक्ष्य मात्र हैं

निष्कर्ष

'निराला की साहित्य साधना' कृति तीन वृहतकाय खंडों में लिखी हुई जीवनीपरक आलोचना है। इन तीनों ही खंडों के प्रकाशन काल में प्रयाप्त अंतर है। प्रथम खंड 1969, द्वितीय खंड 1972 और तीसरा खंड 1976 में प्रकाशित हुआ। इन तीनों खंडों में बहुचर्चित प्रथम खंड रहा है, क्योंकि इस खंड में रामविलास जी ने निराला के जीवन के अंतरंग को बहुत निकट से अनुभव के आधार पर आँका है और उसे भावनात्मक ऊर्जा के साथ महिमामंडित किया है। निराला के जीवन के आरोह और अवरोह, दोनों पक्षों का संतुलित चित्रण प्रथम खंड में किया गया है। इस कृति को रामविलास जी ने शिवपूजन सहाय की पुण्य स्मृति को सादर समर्पित किया है, जिसे निराला जी ने स्वयं सराहा। इस ग्रंथ को लिखने के उद्देश्य को रामविलास जी ने पुस्तक की भूमिका में स्पष्ट कर दिया है। उन्हीं के शब्दों में - "इसे लिखते समय मेरा ध्यान उनके व्यक्तित्व के अध्ययन की ओर रहा है। पंद्रह अध्यायों में जीवन कथा है, अगले तीन अध्यायों में उनके व्यक्तित्व का विश्लेषण है। एक अध्याय पंत और निराला के व्यक्तित्वों पर - उनके साम्य और वैषम्य पर - है। अंतिम अध्याय में तथ्य संग्रह और जीवनी लिखने की समस्याओं का चित्रण है। यह एक साहित्यकार का जीवन चरित है, इसलिए इसमे किसी हद तक उनके साहित्य का मूल्यांकन भी शामिल है पर यह पुस्तक उनके साहित्य की आलोचना नहीं है। निराला के पारिवारिक, सामाजिक परिवेश से, उस युग की सांस्कृतिक परिस्थितियों से, उनके जीवन के बाह्य रूपों के साथ

उनके अंतरजगत से पाठकों को परिचित कराना मेरा उद्देश्य है।" [11,12]

'निराला की साहित्य साधना' के दूसरे खंड में उनकी कला और विचारधारा का विवेचन हुआ है, और तीसरे खंड में उनके जीवन और साहित्य से संबंधित अध्ययन सामाग्री तथा पत्र समाहित हैं। निराला की साहित्य साधना के प्रथमखंड के प्रकाशन से रामविलास जी के समकालीन साहित्यकारों में उनके प्रति एक विशेष आदर का भाव जागा। इस संदर्भ में अमृतलाल नागर ने अपनी खुशी जाहिर करते हुए लिखा है कि "डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा लिखित 'निराला की साहित्य साधना' का प्रथम खंड पाकर मैंने ऐसा संतोष भरा हलकापन अनुभव किया, मानो मेरी ही बरसों की मेहनत सफल होकर सामने आई हो। रामविलास जी की दो अन्य पुस्तकें - 'सन् '57 की राज्य क्रान्ति तथा 'भाषा और समाज' पाकर भी मुझे कमोबेश ऐसा ही अनुभव हुआ था। इस पुस्तक को लिखने का संकल्प रामविलास जी ने तब किया था जब उनकी अन्य यशस्वी कृतियों की कोई योजना उनके मस्तिष्क में नहीं आई थी। यह पुस्तक उनके चिंतन - मनन और अथक श्रम का सुफल है। रामविलास शर्मा के प्रति निराला के मन में अमित आत्मीयता से भरा वात्सल्य भाव था। निराला जी उनके जीवन में तब आए जब या तो वे अपने भक्तों से घिरे थे या कटु आलोचकों से। रामविलास शर्मा निराला की दृष्टि में निरालाविद् सिद्ध हुए। 2 रामविलास शर्मा से निराला जी को उनकी खूबियों की सराहना तो मिलती ही थी, साथ ही उन्हें अपनी उन विशेषताओं का भी पता चलता था जिनकी ओर स्वयं उनका ध्यान तब तक न गया होता। 'निराला की साहित्य साधना' पुस्तक ऐसे समय में प्रकाशित हुई जब कि निराला युग एकदम भूले-बिसरे जमाने की कहानी नहीं बन पाया था। 'निराला की साहित्य साधना' का प्रथम खंड उनके जीवन पर आधारित है और यह उनकी जीवनी ही है। इसमें निराला का चरित्र चित्रांकन करने में रामविलास जी ने बहुत तन्मयता साधी है। निराला के योगी-भोगी, गृहस्थ - अगृहस्थ और उनके कठिन - कोमल चरित्र को सूझबूझ भरी मर्मभेदी दृष्टि से देखकर उनके जीवन क्रम को यथावत सँजोने में उन्होंने अपनी औपन्यासिक प्रतिभा का परिचय दिया है। इस ग्रंथ के प्रथम अध्याय से ही कहानी का ऐसा समां बंधता है कि किताब पूरी पढ़े बिना रहा नहीं जा सकता। निराला का जीवन तो अनेकों नाटकीय पड़ावों से होकर गुज़रता है। इस खंड की रचना में कथा-शिल्प को साधकर रामविलास शर्मा ने एक उपन्यासकार की तरह निराला के जीवन को प्रस्तुत करने में सफलता हासिल की है। परंतु इस विधा को अपनाकर भी वे एक क्षण के लिए भी इतिहासकार होने के दायित्व से नहीं हटे।

निराला का जीवन जितना ही जटिल और अंतर्विरोधों से भरा हुआ था उतना ही उनका साहित्य भी जटिलताओं से भरा है। प्रकृति, मनुष्यता, जीवन संघर्ष और पराजय, भक्ति और ज्ञान सौन्दर्य बोध और राष्ट्रीयता जैसे वैविध्य पूर्ण चिंतन की सरणियों से होकर निराला का मानसिक और भौतिक जगत एक पहेली बनकर दुनिया के सामने आता है। उनके जीवन में सामाहित इतने अंतर्विरोधों को प्रशंसा और आलोचना के जोखिम से बचते हुए, तटस्थ होकर लिख पाना दुष्कर साहित्यिक कर्म है जिसे रामविलास जी ने बखूबी निभाया। निराला का जीवन और कृतित्व इस बात का जीता-जागता प्रमाण है कि वे जीवन भर अपने व्यक्तित्व और लेखन दोनों से ही अतिवादी प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न करते रहे, और उनकी मृत्यु के बाद भी उनके बारे जो कुछ लिखा गया है उसमें श्रद्धांजलि का भाव अधिक है, एक समर्थ कृतिकार और तेजस्वी व्यक्ति का वस्तुपरक मूल्यांकन या विश्लेषण बहुत कम। इस पुस्तक का उद्देश्य निस्संदेह बड़ा और महत्वाकांक्षी है। रामविलास शर्मा ने निराला के जीवन का भरसक वस्तुपरक जीवन चित्र दिया है, जिसका उद्देश्य पाठक को मुग्ध करना नहीं बल्कि विवेक से निराला के व्यक्तित्व को समझने में सहायक होना है। रामविलास शर्मा का निराला के साथ लंबे समय तक बड़ा गहरा और निजी संबंध रहा है इसीलिए वे निराला के बहुत से बाहरी और आंतरिक संघर्षों के साक्षी रहे। निराला के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ उनका लगाव और तादात्म्य भी ऐसा रहा है जो सूक्ष्म अंतर्दृष्टि और सहानुभूति के साथ लिखने में सहायक हुआ। [13] जाहिर है कि अपनी इस पुस्तक में उन्होंने निराला के जीवन से संबंधित बहुत सी नई सामग्री का बड़ी मेहनत और लगन के साथ विभिन्न स्रोतों से संग्रह कर बहुत सी परिचित और अल्प-परिचित घटनाओं, परिस्थितियों और प्रसंगों को एक तर्क संगत क्रम में रखने की कोशिश की है। विशेषकर जिस युग में निराला की प्रतिभा विकसित होकर निखरी, उस पूरे दौर के साहित्यिक इतिहास की बहुत सी महत्वपूर्ण स्थितियों और घटनाओं से निराला के संबंध को स्पष्ट किया। किसी भी जीवनीकार के लिए यह आवश्यक है कि वह सभी महत्वपूर्ण तथ्यों को लेकर, चाहे वे कितने ही अप्रिय या अवांछनीय क्यों न हों, एक निष्पक्ष जीवन वृत्त प्रस्तुत करे और उन तथ्यों में अभिव्यक्त आंतरिक विरोधों, असंगतियों और विविधताओं के बीच से एक जीवंत व्यक्तित्व को उभारकर रख दे। इस कार्य में जितनी सहानुभूति और अंतर्दृष्टि की आवश्यकता है उतनी ही निष्पक्षता और निर्मम तटस्थता की भी। इस दृष्टि से यह स्पष्ट है कि रामविलास शर्मा द्वारा प्रस्तुत निराला का जीवन चित्र वस्तुपरक से अधिक रोमांटिक है साथ ही उनकी प्रतिभा को महिमामंडित करने का उद्देश्य प्रधान है। "इसीलिए इस ग्रंथ में निराला के व्यक्तित्व का जो विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है वह उसके बुनियादी अंतर्विरोध का बेझिझक सामना करने की बजाय उसके नोविश्लेषणमूलक या अन्य प्रकार के औचित्य खोजने में उलझ जाता है।" [14]

संदर्भ

[1] निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा॰लि॰, नयी दिल्ली, संस्करण-२००२, पृष्ठ-१७ एवं ४४३. (पृष्ठ-१७ पर निराला की जन्मतिथि के संदर्भ में अंग्रेजी तारीख देने के क्रम में मुद्रण-त्रुटि से २१ फरवरी के बदले २९ फरवरी मुद्रित हो गया है जिसका स्पष्टीकरण संवत् एवं तिथि के अनुसार अंग्रेजी तारीख बनाने के अतिरिक्त इसी पुस्तक के पृष्ठ संख्या-४४३ पर उल्लिखित तथ्यों के अनुसार भी आसानी से हो जाता है। पृष्ठ संख्या-४४३ पर निराला के जन्म के संदर्भ में पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात् उनकी उक्त जन्मतिथि निर्धारित की गयी है। अतः किन्ही व्यक्ति को पूर्वाग्रहवश किसी अन्य तिथि को निराला की जन्मतिथि मानकर स्वयं या अन्य लोगों को भ्रमित करने की दिशा में कदम नहीं बढ़ाना चाहिए।)

[2] "स्पैनिश फ्लू यानी जब मौत के तांडव ने दिया हिन्दी के महान कवि को जन्म".

[3] "निराला जयंती". ऋषभ. मूल से 27 मई 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि १० दिसम्बर २००८. |access-date= में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)

[4] "How literature has helped us make sense of pandemics".

[5] "References to death and disease in Hindi literature".

[6] हिन्दी साहित्य कोश, भाग-२, सं° धीरेन्द्र वर्मा एवं अन्य, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी, पुनर्मुद्रित संस्करण-२०११, पृष्ठ-६५१.

[7] निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा°लि°, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ०-39-40.

[8] निराला रचनावली, खण्ड-1, सं°-नन्दकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नयी दिल्ली, संस्करण-1998, पृ०-19.

[9] निराला की साहित्य साधना, प्रथम खण्ड (जीवन चरित), रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन प्रा°लि°, नयी दिल्ली, संस्करण-2002, पृ०-60-61 तथा पृ०-440-441.

[10] निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृ°-42.

[11] निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृ°-20.

[12] निराला रचनावली, खण्ड-5, पूर्ववत्, पृ°-14.

[13] निराला रचनावली, खण्ड-7, पूर्ववत्, पृ°-15.

[14] निराला रचनावली, खण्ड-1, पूर्ववत्, पृष्ठ-16.

International Journal of Trend in Scientific Research and Development
IJTSRD
International Journal of Trend in Scientific Research and Development
ISSN: 2456-6470